'प्लेटो का आदर्श राज्य'

प्लेटो पाश्चात्य जगत का प्रथम राजनीतिक विचारक है, जिसने क्रमबद्ध रूप से राज्य, शासन एवं कानून आदि पर अपने विचार दिये हैं। प्लेटो मूलतः एक आदर्शवादी विचारक रहा है। उसने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ रिपब्लिक में राज्य के आदर्श रूप की चर्चा की है तथा बताया है कि उसके आदर्श राज्य में मनुष्य के तत्कालीन सभी राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं का हल मौजूद है।

ऐसा नहीं है कि प्लेटो के चिन्तन के केन्द्र में राज्य का आदर्श रूप अनायास आ गया बल्कि इसके लिये यूनान की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ काफी हद तक जिम्मेवार रही है। प्लेटो के समय उसका राज्य एथेंस पेलोपोनेसिया के युद्ध में स्पार्टा से हार गया। इस हार के कारण वहाँ प्रजातंत्र का पराभव हो गया तथा तीस व्यक्तियों (Thirty Tyrants) का आततायी शासन स्थापित हो गया। कुछ ही समय बाद वहाँ पुनः प्रजातंत्र की स्थापना हुई। प्रजातंत्र की स्थापना में वह सहभागी भी था और आगे जाकर जब प्रजातंत्र अपने लक्ष्यों से भटक गया तो वह अपने को उससे किनारा कर लिया तथा राजनीति से सन्यास ले लिया। वस्तुतः इसी प्रजातांत्रिक व्यवस्था ने 399 ई० पू० में सुकरात को प्राणदंड दी थी। कमोवेश ऐसी स्थिति यूनान के सभी राज्यों में मौजूद थी। यूनान के लगभग सभी नगर राज्यों में व्यक्तिवाद, अक्षमता, अस्थिरता एवं राजनीतिक स्वार्थपरता का वातावरण था। ऐसे में उसने एक विवेकशील शासक (दार्शनिक शासक) की कमी महसूस की और अपनी पुस्तक रिपब्लिक में आदर्श राज्य का सृजन किया। यह बात अलग है कि प्लेटो ने राज्य के आदर्श रूप का सृजन करते समय एक चित्रकार की भाँति व्यवहारिकता की उपेक्षा की है।

प्लेटो का मानना है कि उसके आदर्श राज्य का विकास तीन चरणों में होगा। प्लेटो के आदर्श राज्य के विकास के प्रथम चरण में उत्पादक वर्ग का जन्म होता है। उसके अनुसार

मानव की आर्थिक आवश्यकतायें राज्य की उत्पत्ति का प्रमुख आधार है क्योंकि इनकी पूर्ति के लिये ही व्यक्ति किसी न किसी प्रकार का सम्पर्क सहयोग करने को बाध्य होता है। इकाई रूप में कोई भी व्यक्ति अपने समस्त आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता जबकि पारस्परिक सहयोग एवं विनिमय से सभी अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। किसी भी व्यक्ति या समाज के आर्थिक हितों की समुचित रूप से रक्षा तभी हो सकती है जब व्यक्ति अपने द्वारा तैयार वस्तुयें समाज को प्रदान करें तथा अपनी आवश्यकता की अन्य वस्तुयें समाज से प्राप्त करें। आर्थिक जीवन में वस्तुओं का इस प्रकार आदान-प्रदान श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण को जन्म देता है। इस तरह प्रथम चरण में उत्पादक वर्ग का जन्म होता है जिसका प्रमुख गुण सम्पत्ति प्रेम तथा क्षुधा है।

राज्य की उत्पत्ति का दूसरा चरण तब प्रारंभ होता है जब सैनिक वर्ग का उदय होता है जो राज्य के साहस तथा उत्साह का प्रतिनिधि है। राज्य के अंग के रूप में इस वर्ग का प्रमुख गुण उत्साह है। प्लेटो के अनुसार मनुष्य सिर्फ आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने मात्र से संतुष्ट नहीं हो जाता बल्कि वह अपनी सांस्कृतिक इच्छाओं को भी तृप्त करना चाहता है। इसे संगीत, साहित्य, काव्य आदि विभिन्न वस्तुओं की तलाश होती है। इन विभिन्न वस्तुओं के प्राप्ति हेतु अधिसंख्यक लोगों का होना आवश्यक है। अधिसंख्यक लोगों के निवास तथा भरण पोषण के लिये विशाल भू-प्रदेश की आवश्यकता होती है। विशाल भू-प्रदेश को अधिकृत करने के लिए युद्ध होता है। युद्ध के लिए सैनिक वर्ग का उदय होता है। सैनिक वर्ग मानव आत्मा के उत्साह एवं साहस तत्व का प्रतीक है।

आदर्श राज्य के निर्माण का तीसरा चरण तब प्रारंभ होता है जब सैनिक वर्ग से ही विवेक तत्व का प्रतिनिधित्व करने वाले सर्वोच्च वर्ग का निर्माण होता है। इसके अनुसार सैनिक वर्ग के लोगों में सामान्यतया उत्साह तथा विवेक पाया जाता है किंतु इसमें कतिपय लोग भी होते हैं जिनमें उत्साह की अपेक्षा विवेक का अत्यधिक बाहुल्य होता है। ऐसे लोगों को प्लेटो राज्य का दार्शनिक शासक मानता है। विवेक के अन्तर्गत प्लेटो ने दो गुण माने हैं। प्रथम विवेक से व्यक्ति को ज्ञान होता है तथा द्वितीय विवेक व्यक्ति को प्रेम करना सिखाता है। अतः प्लेटो के अनुसार शासक को विवेकशील होना चाहिए एवं उसमें पर्याप्त मात्रा में स्नेहशीलता होनी चाहिए।